ज्ञानदीप

(त्रैमासिक सूचना पत्र)

भारतीय रेल सिविल इंजीनियरी संस्थान, पुणे - 411 001

आई. एस. ओ. : 9001 प्रमाणित भारतीय रेल का

प्रथम प्रशिक्षण संस्थान

संस्थान - डी ओ टी (020) 26122271, 26123436, 26123680, 26111554
रेलवे - 55222, 55860, 55862

छात्रावास - डी ओ टी (020) 26130579, 26126816, 26121669
रेलवे - 55980, 55981, 55976

फैक्स : 020-26128677
ई-मेल : mail@iricen.gov.in
टेलीग्राम : रेलपथ
वेब साइट : www.iricen.gov.in

वर्ष - 9 अंक - 36 अक्तूबर-दिसंबर 2005

इस अंक में

1. वित्त आयुक्त (रेलवे) का इरिसेन दौरा
2. इरिसेन में महाप्रबंधक, दक्षिण पश्चिम रेल, का दौरा
3. अपर सदस्य, कार्मिक, का इरिसेन में दौरा
4. सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन
5. कैलेण्डर हैमिलटन स्पैन का उपयोग करके पुलों के पुनर्स्थापन पर तकनीकी फिल्म का विमोचन
6. मुख्य पुल इंजीनियरों का सेमिनार
7. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 89 वीं बैठक
8. सिविल इंजीनियरी प्रशिक्षण केन्द्रों के प्राचार्यों की दो दिवसीय बैठक
9. वरिष्ठ संकाय सदस्य का डेनमार्क एवं स्वीडन दौरा
10. विशेष पाठ्यक्रम/ उपलब्धियां
11. स्वागत
12. विदाई
13. बधाई
14. क्या आप जानते हैं ?
15. सृजन (धारावाहिक)

1. वित्त आयुक्त (रेलवे) का इरिसेन दौरा

दिनांक 10/10/2005 को श्रीमती वी.विश्वनाथन, वित्त आयुक्त (रेलवे) ने संस्थान का दौरा किया। आपने संस्थान के ग्रंथालय, कंप्यूटर केन्द्र एवं पदार्थ परीक्षण प्रयोगशाला का अवलोकन किया एवं संकाय सदस्यों एवं भा.रे.सि.इंजी.से. के परिवीक्षार्थियों को संबोधित किया। अंत में आधुनिक तकनीकी के उपयोग से प्रशिक्षण के क्षेत्र में संस्थान द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशंसा के रूप में इरिसेन के संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों के लिए रु.50,000/- के नकद पुरस्कार की घोषणा की गई। अतिथि पुस्तिका में आपके उद्गार इस प्रकार हैं :

"उपकरणों की व्यवस्था प्रभावी है, महत्वपूर्ण प्रयास है ।"

श्रीमती वी.विश्वनाथन, वित्त आयुक्त (रेलवे), संबोधन करते हुए

2. इरिसेन में महाप्रबंधक, दक्षिण पश्चिम रेल, का दौरा

दिनांक 11/10/05 को श्री त्रिलोक नाथ पर्ती, महाप्रबंधक, द.प.रेल द्वारा संस्थान का दौरा किया गया। आपने ग्रंथालय कंप्यूटर केन्द्र, पदार्थ परीक्षण प्रयोगशाला का अवलोकन किया एवं प्रशिक्षु अधिकारियों को संबोधित किया । अतिथि पुस्तिका में आपके उद्गार निम्नानुसार है :

" मैं ई-लर्निंग में प्रतिभागियों के किए गए प्रयास एवं कंप्यूटर के उपयोग को देखकर अत्यंत प्रसन्न और प्रभावित हुआ हूं । इरिसेन वेबसाईट वास्तविक में एक वरदान है, जो न केवल संस्थान के प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए बल्कि समस्त रेलकर्मियों एवं सिविल इंजीनियरों को उपयोगी जानकारी देता है। पदार्थ परीक्षण प्रयोगशाला की उपस्करें एवं उनकी विशिष्टताएं सिविल इंजीनियरों की सेवा में सहायक होगी । इसे बनाए रखें ! बहुत अच्छा !! "

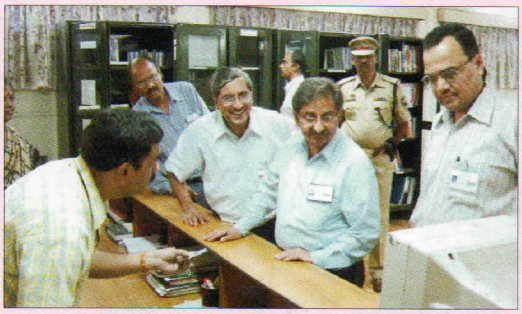

श्री त्रिलोक नाथ पर्ती, महाप्रबंधक, द.प.रेल, ग्रंथालय का निरीक्षण करते हुए

संरक्षक
शिव कुमार
निदेशक
भा.रे.सि.इं.सं.पुणे

मुख्य संपादक
प्रवीण कुमार
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं प्राध्यापक - कंप्यूटर्स

संपादक
अरुणाभा ठाकुर
राजभाषा अधीक्षक

सहयोग
अरुण चांदोलीकर
सह प्राध्यापक
अशोक पोलके, रा.भा.स. I
आर.जे.पाल, रा.भा.स. II

3. अपर सदस्य, कार्मिक, रेलवे बोर्ड का संस्थान में दौरा

दिनांक 24/10/05 को श्री एस.सी.मनचंदा, अपर सदस्य, कार्मिक, रेलवे बोर्ड ने संस्थान का दौरा किया। उन्होंने संस्थान के ग्रंथालय, कंप्यूटर केन्द्र, पदार्थ परीक्षण प्रयोगशाला इत्यादि का निरीक्षण किया एवं संस्थान के संकाय सदस्यों के साथ एक बैठक की। अतिथि पुस्तिका में उनकी उक्ति इस प्रकार है :

"अध्यापन सामग्री को आधुनिक बनाने एवं अध्यापन प्रणाली की सरल शैली की नवीन प्रक्रिया जो कि इरिसेन में स्वत: ही निर्मित की गई है उससे मैं प्रभावित हुआ हूं। संकाय सदस्यों के दल तथा उनके निदेशक द्वारा अच्छे प्रयास किए जा रहे हैं । अन्य केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थानों को इस प्रकार की योजनाएं लागू करने की आवश्यकता है। "

श्री एस.सी.मनचंदा, अपर सदस्य, कार्मिक, रेलवे बोर्ड, संस्थान का निरीक्षण करते हुए

4. सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

संस्थान में दिनांक 07 नवंबर 05 से 11नवंबर 05 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। दिनांक 07 नवंबर को शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। सप्ताह के दौरान **"भारतीय रेल पर भ्रष्टाचार "** निबंध प्रतियोगिता एवं **" सफर रेल का आपका और हमारा"** नाटक मंचन एवं विचार -विमर्श सत्र का भी आयोजन किया गया। जिसमें प्रशिक्षु अधिकारियों तथा संकाय अध्यक्ष ने भी अपने विचार व्यक्त किए। तत्पश्चात निदेशक महोदय ने सतर्कता के सात सिद्धांतों पर प्रस्तुतीकरण दिया। सप्ताह के समापन समारोह के अवसर पर प्रतियोगिताओं में विजयी प्रशिक्षु अधिकारियों को पुरस्कृत भी किया गया ।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर आयोजित नाटक के अंत में स्मारिका भेंट करते हुए श्री चंद्रप्रकाश, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) कार्मिक एवं योजना

5. कैलेण्डर हेमिलटन स्पैन का उपयोग करके पुलों के पुनर्स्थापन पर एक तकनीकी फिल्म का विमोचन

दिनांक 07.12.05 को संस्थान में निदेशक महोदय के संरक्षण में श्री प्रवीण कुमार, प्राध्यापक/कंप्यूटर्स एवं उप मुख्य राजभाषा अधिकारी द्वारा निर्मित कैलेण्डर हेमिलटन स्पैन का उपयोग करके पुलों के पुनर्स्थापन पर एक तकनीकी फिल्म की सीडी का विमोचन पुल संरचना में विशेष महारत रखनेवाले उत्तर रेलवे के समर्पित कार्यकारी इंजीनियर/पुल श्री गोपालन के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर सभी अतिथि अधिकारी एवं संकाय सदस्यों ने इस ज्ञानवर्द्धक फिल्म का प्रथम अवलोकन किया।

कैलेण्डर हेमिलटन स्पैन की सीडी के विमोचन का दृश्य

6. मुख्य पुल इंजीनियरों का सेमिनार

संस्थान में दिनांक 28/12/05 से 29/12/05 तक मुख्य पुल इंजीनियरों के सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें भारतीय रेल के 17 मुख्य/उप-मुख्य पुल इंजीनियरों ने हिस्सा लिया।

सम्मेलन कक्ष में पुलों से संबंधित विषय पर विचार विमर्श

7. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 89 वीं बैठक

दिनांक 17 अक्टूबर को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 89 वीं बैठक सम्पन्न हुई , जिसमें 30/09/05 को समाप्त तिमाही की हिंदी प्रगति की समीक्षा की गई । निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में अध्यक्ष महोदय ने संस्थान में हिंदी दिवस एवं राजभाषा सप्ताह के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के उत्साहवर्द्धक योगदान की सराहना की एवं कार्यक्रम की सफलता पर सभी को बधाई दी। बैठक में संस्थान के उप मुख्य राजभाषा अधिकारी ने हिंदी की पुनर्सज्जित वेबसाइट का डेमो दिया। निदेशक महोदय एवं बोर्ड के अनुदेशानुसार इस बैठक में उपस्थित मध्य रेल के उप मुख्य राजभाषा अधिकारी ने इसकी सराहना की ।

8. सिविल इंजीनियरी प्रशिक्षण केन्द्रों के प्राचार्यों की दो दिवसीय बैठक

सिविल इंजीनियरी प्रशिक्षण केन्द्रों के प्राचार्यों की दो दिवसीय बैठक दिनांक 18.10.05 से 19.10.05 तक आयोजित की गई। निदेशक (मानव शक्ति परि.) के साथ-साथ विभिन्न प्रशिक्षण केंद्रों के ग्यारह प्राचार्यों ने बैठक में हिस्सा लिया तथा सामान्य मुद्दों पर विचार - विमर्श किया।

9. वरिष्ठ संकाय सदस्य का डेनमार्क एवं स्वीडन दौरा

श्री अशोक कुमार यादव, वरिष्ठ प्राध्यापक / पुल, ब्रह्मपुत्र नदी पर बोगीबील रेल-सह-सड़क पुल के लिए कंपोजिट गर्डर ब्रिज के अभिकल्प /निर्माण /स्थापना के संबंध में प्रशिक्षण के लिए डेनमार्क एवं स्वीडन में प्रतिनियुक्त किए गए थे। उनके द्वारा अर्जित ज्ञान प्रशिक्षु अधिकारियों में बांटा जाएगा ।

ओरिसुंड ब्रिज केबल स्टेड रेल -कम-रोड कंपोजिट डेक ब्रिज का दृश्य

10. विशेष पाठ्यक्रम

दिनांक 19 से 20 जुलाई 2005 तक सदस्य इंजीनियरी ने इरिसेन दौरे में इच्छा व्यक्त की थी कि फील्ड ओरिएन्टेड विशेष पाठ्यक्रम आयोजित किए जाएं ।

- इसी श्रृंखला में इरिसेन में दिनांक 20/10/05 से 21/10/05 तक आयरन ओर मार्गों पर माल वैगनों के एक्सेल लोड में बढ़ोत्तरी का प्रभाव तथा भविष्य की संभावनाओं पर विशेष पाठ्यक्रम आयोजित किया गया । पाठ्यक्रम में विभिन्न रेलों के 17 अधिकारी उपस्थित हुए । क्षेत्रीय रेलों, अ.अ.मा.सं.एवं रेलवे बोर्ड के अतिथि संकायों ने अपने अमूल्य विचारों/ अनुभवों से प्रतिभागियों को अवगत कराया ।
- दिनांक 21 से 22 नवंबर, 05 तक लंबी वेल्डित रेलों की डिस्ट्रेसिंग पर विशेष पाठ्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न रेलों के 14 अधिकारियों ने भाग लिया ।
- दिनांक 5 से 7 दिसंबर 05 तक पुलों की अस्थाई व्यवस्थाओं पर विशेष पाठ्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न रेलों के 14 अधिकारियों ने भाग लिया ।
- दिनांक 8 से 9 दिसंबर 05 तक पुलों के निरीक्षण पर विशेष पाठ्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न रेलों के 16 अधिकारियों ने भाग लिया ।

उपलब्धियां

- माह नवंबर, 2005 में संस्थान को 144 अधिकारियों को प्रशिक्षण देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जो संस्थान की सामान्य क्षमता से अधिक है। **यह एक रेकार्ड उपलब्धि है**। यह दर्शाते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि इस वर्ष 2005 के दौरान संस्थान में 1429 अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया जबकि वर्ष 2004 कैलेण्डर वर्ष में यह संख्या 983 थी , जो 40 % अधिक है।
- आइ आर पी डब्ल्यू एम पर ई -लर्निंग सीडी जिसमें ऑडियो एवं खोज सुविधा तथा संदर्भो को जोड़नेवाली लिंकेज है, रेल अधिकारियों के लाभ के लिए रिलीज की गई। इसे संस्थान की वेबसाइट www.iricen.gov.in पर अप लिंक भी किया गया है ।
- संस्थान में रेलवे बोर्ड के दिनांक 14/09/05 के पत्र सं.पी.सी./III/2005/सीआरसी/II के अंतर्गत समूह **ग** एवं **घ** कर्मचारियों के संवर्ग की पुनर्संरचना का कार्य परिपालित किया गया है। जिससे 37 कर्मचारी लाभान्वित हुए हैं।

11. स्वागत

भा.रे.इं.से.के 1980 बैच के अधिकारी श्री सुरेश गुप्ता ने अक्तूबर माह में संस्थान के संकाय अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया। इसके पूर्व आप नवंबर 02 से पूर्वोत्तर रेल गोरखपुर ,में मुख्य रेलपथ इंजीनियर के पद पर कार्यरत थे। आपने गर्वन्हमेंट इंजीनियरी कॉलेज, रीवा से 1980 में बी. ई. (सिविल) की उपाधि प्राप्त की । आपको रेलपथ प्रबंधन एवं निर्माण प्रबंध पर बहुमूल्य एवं विस्तृत अनुभव प्राप्त है। आपने क्षेत्रीय रेलों के महत्वपूर्ण क्षेत्रों जैसे रेल कोच फैक्टरी एवं मुख्य इंजीनियर योजना एवं रेलपथ मशीन, नए जोन के निर्माण में उप मुख्य इंजीनियर/जबलपुर, व.मं. इंजी आदि महत्वपूर्ण पदों पर अपने दायित्व का निर्वहन बखूबी किया है। निर्माण एवं रेल संम्पति का अनुरक्षण आपके रूचि के विषय है। संस्थान आपका हार्दिक स्वागत करता है ।

भा.रे.इं.से. के 1990 बैच के अधिकारी श्री अतुल अग्रवाल ने संस्थान में अक्तूबर माह में प्राध्यापक रेलपथ-3 का पदभार ग्रहण किया है। इसके पूर्व आपने दक्षिण रेल के चेन्नई -अरक्कोनम सेक्शन के अनुरक्षण प्रभारी के रुप में सहायक इंजीनियर /चैन्नई के पद पर कार्य किया। बैंगलोर-सेलम गेज परिवर्तन परियोजना पर सहायक इंजीनियर/ कार्यकारी इंजीनियर के रुप में तथा शोर्वूर -मैंगलोर लाइन के दोहरीकरण में कार्यकारी इंजीनियर के रुप में भी कार्य किया है । आप दक्षिण रेलवे के चेन्नई मंडल में वरिष्ठ मंडल इंजीनियर के रुप में तथा दिल्ली मेट्रो में प्रतिनियुक्ति पर भी कार्य किया है । संस्थान आपका हार्दिक स्वागत करता है।

12. विदाई

श्री जी.पी.सोरडगे ने दिनांक 19/04/05 को संस्थान के सहायक मंडल वित्त प्रबंधक का पदभार ग्रहण किया था। पदोन्नति पर उनका स्थानांतरण कारखाना वित्त प्रबंधक ,भुसावल मध्य रेल के पद पर हुआ है । संस्थान आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है ।

13. बधाई

अधिकारियों को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

02 जनवरी - श्री घनश्याम बंसल,प्राध्यापक / पुल
12 जनवरी - श्री एम.मलन्ना, सहा.कार्य.इंजी. / 2
20 फरवरी - श्री ए.के.राय, प्राध्यापक /कार्य

अधिकारियों को विवाह वर्षगांठ पर हार्दिक बधाई

07 जनवरी - श्री एन.आर.काले, सहा.कार्य.इंजी. / 1
02 फरवरी - श्री के. नारायण, निजी सचिव -निदेशक
22 फरवरी - श्री शिव कुमार, निदेशक

कर्मचारियों को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

01 जनवरी - श्रीमती लता राजन, वरि.अनु.अधिकारी (लेखा)
01 जनवरी - श्री दयानंद बारकोजी , वरिष्ठ खलासी
01 जनवरी - श्री अशोक तुकाराम, वरिष्ठ खलासी
11 जनवरी - श्री शैलेन्द्र प्रकाश, सहायक ग्रंथपाल
12 जनवरी - श्रीमती विद्या धानेकर, कार्या.अधी. -II
14 जनवरी - श्रीमती गायत्री नायक , प्रवर आशुलिपिक
21 जनवरी - श्रीमती चारुशीला ननावरे, वरिष्ठ चपरासी
26 जनवरी - श्री गौतम हरिभक्त, प्रधान लिपिक
01 फरवरी - श्री के.के आयजैक,प्रधान लिपिक
05 फरवरी - श्री बबन मारूती,फिटर ,ग्रेड -II
08 फरवरी - श्री फ्रांसिस जॉन गोपालन, वरिष्ठ खलासी
09 फरवरी - श्री राजू जे. पाल, राजभाषा सहायक -II
10 .फरवरी - श्री गौस मोहम्मद , खलासी
13 फरवरी - श्री अतुल घोड़ेकर, छात्रावास अधी.-1
28 फरवरी - श्री जे.एस.शेट्टी, मुख्य कार्या.अधी. (स्थापना)
01 मार्च - श्री शिरिष मोरे, रेलपथ मेट
01 मार्च - श्री विलास तावड़े, वरिष्ठ खलासी
15 मार्च - श्री शांताराम पोपट, खलासी
16 मार्च - श्री संजय भोसले, वरिष्ठ खलासी

कर्मचारियों को विवाह वर्ष गांठ पर हार्दिक बधाई

10 फरवरी - श्रीमती जयंती दंडपाणि, कार्या.अधी.II
13 फरवरी - श्रीमती चारूशीला ननावरे, वरिष्ठ चपरासी
19 फरवरी - श्रीमती अरूणाभा ठाकुर,राजभाषा अधीक्षक
19 फरवरी - श्री अतुल घोड़ेकर, छात्रावास अधी.-1
28 फरवरी - श्री के.पी.धुमाल, वै.सहा. संकाय अध्यक्ष
05 मार्च - श्री राजू जे.पाल, राजभाषा सहायक - II
07 मार्च - श्री दयानंद बारकोजी, खलासी
08 मार्च - श्री कृष्ण बहादुर, सहायक रसोइया

14. क्या आप जानते हैं ?

- श्रापशेयर (ब्रिटेन) के कोल ब्रुक डेल में वर्ष 1767 में पहली धातु की रेल का निर्माण किया गया था। प्राचीन धातु की रेलें तीन फीट लंबी ढलुआं लोहे की होती थीं ।
- ब्रिटेन में 1820 में पहली वेल्डित रेल बनायी गई । ये रेलें 18 फीट लंबी हुआ करती थीं।
- वर्ष 1857 में मिडलैंड रेलवे (इंगलैंड) के डरबी स्टेशन में पहली इस्पात रेलों का उपयोग किया गया था ।
- बड़ौदा स्टेट रेलवे (छोटी लाइन) जो 1863 में प्रारंभ हुई थी , उस पर आरंभ में कुछ समय तक गाड़ियां बैलों द्वारा खींची जाती थीं । बाद में भाप इंजन आयात किया जाने लगा।

अभयकुमार राय, प्राध्यापक/कार्य के सौजन्य से

15. सृजन (धारावाहिक लेख)

भारतीय जनतंत्र, राजनीति और राजभाषा हिंदी का सवाल

श्रीमती सरला माहेश्वरी,
उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति,
11, तीन मूर्ति मार्ग, नई दिल्ली

जैसा कि शुरु में ही कहा है , भारत एक बहुराष्ट्रीय देश है। यहां की 18 भाषाओं को संवैधानिक स्वीकृति प्राप्त है । संस्कृति का वैविध्य भी एक जानी मानी सच्चाई है । खासतौर पर आजादी के पहले के उन वर्षों में जब संचार व्यवस्था आज की तरह विकसित नहीं हुई थी, उस समय यह विविधता और भी ज्यादा प्रकट थी ।

हजारों वर्षों से भारत के जनमानस में एक अखंड भारत वर्ष की परिकल्पना होने के बावजूद यह सच्चाई है कि अखंड भारत से दूरदराज के अफगानिस्तान , बर्मा, नेपाल और श्रीलंका के क्षेत्रों को हटा भी दिया जाए, तब भी जो ब्रिटिश काल का भारत था अथवा और भी कम करके जो आज का भारत है उसमें भी अलग अलग क्षेत्रों के बीच संचार की कमी की वजह से ही अलगाव और दूरिंया बनी हुई थीं। हर दो कोस पर भाषा के बदलने की जो बात कही जाती है, वह इसी संचार के अभाव की स्थिति को ही दर्शाती है। अंग्रेजों के औपनिवेशिक शासन के विरूद्ध भारत के तमाम लोग आजादी के साझा उद्देश्य के आधार पर एकजुट हुए थे । इस एकता को बनाने में ब्रिटिश काल में ही विकसित हुए संचार के माध्यमों ने भी एक बड़ी भूमिका अदा की थी। अंग्रेजों ने भारत की संपदा को लूटने के लिए रेलों और सड़कों का जाल बिछाया , लेकिन इन्हीं रेलों और सड़कों ने प्रकारान्तर से भारत की जनता की एकता को एक सुदृढ आधार प्रदान किया और भारतीय पूंजीवाद के लिए एक आखिल भारतीय बाजार के विकास की संभावना तैयार की । इस प्रकार ब्रिटिश काल में ही संचार के विकास और उपनिवेशवाद के विरूद्ध लड़ाई के साझा हितों ने भारतीय राष्ट्रवाद के लिए ठोस जमीन तैयार की । लेकिन इतने भर से भारत का क्षेत्रीय वैविध्य समाप्त नहीं हो गया । उल्टे, यह भी देखा गया कि ब्रिटिश उप निवेशवाद से मुक्ति प्रक्रिया ने क्षेत्रीय राष्ट्रवाद की भावनाओं को भी जन्म दिया । भारत की सभी आधुनिक भाषाएं इसी दौर में सबसे अधिक विकसित हुई और उन्होंने अलग - अलग क्षेत्र के लोगों को एकजुट करने में बड़ी भारी भूमिका अदा की ।

जब हम अपनी आजादी की लड़ाई के इतिहास को देखते हैं तो पाते हैं कि हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने भारतवर्ष के इस वैविध्यमय स्वरूप को समझते हुए ही आजाद भारत की जो भी परिकल्पना पेश की उसे हमेशा एक संघ के रूप में देखा । ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूध्द भारतीय राष्ट्रवाद के हितों के लिए ही उन्होंने क्षेत्रीय राष्ट्रीयताओं को स्वीकृति और पूर्ण मर्यादा प्रदान की और यही वजह रही कि धर्म और जाति के नाम पर भारत की जनता की लड़ाई को तोड़ने की ब्रिटिश शासकों की नीति तो काफी कारगर साबित हुई, लेकिन क्षेत्रीय विविधता और राष्ट्रीयता के आधार पर भारत के लोगों ने भारत के राष्ट्रीयता स्वतंत्रता आंदोलन मे अपनी मुक्ति को देखा। भारतीय राष्ट्रीयता सबको साथ लेकर चलने वाली राष्ट्रीयता के रूप में सामने आई । इसमें किसी भी प्रकार के उत्पीड़न , वंचना अथवा अन्याय के तत्वों के लिए कोई स्थान नहीं था ।

भारतीय राष्ट्रवाद की यही वह विशेष पृष्ठभूमि है, जिसके संदर्भ में हमें राष्ट्रभाषा हिंदी और उससे जुड़े हुए प्रश्नों पर गौर करना चाहिए।

- शेष आगामी अंक में

शील,परोपकार,विनय,क्षमा,धैर्य और अलोभ - ये विद्या की पूर्णता के उज्जवल पक्ष हैं।

प्रवीण कुमार, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्राध्यापक , कंप्यूटर्स , भारतीय रेल सिविल इंजीनियरी संस्थान , पुणे -1 द्वारा केवल सीमित निशुल्क वितरण हेतु प्रकाशित एवं मेसर्स, **कल्याणी कॉर्पोरेशन,** 1464 सदाशिव पेठ, पुणे - 411030. फोन : 24486080 द्वारा मुद्रित । (3000 प्रतियां)